परास्नातक संस्कृत कार्यक्रम (एम.ए.संस्कृत)
(एम.एस.के.)

सत्रीय कार्य (Assignment)

(जुलाई, 2025 एवं जनवरी, 2026 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : **MSK-001**
संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

परास्नातक संस्कृत कार्यक्रम (एम.ए.संस्कृत)
(एम.एस.के.)

संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

सत्रीय कार्य (2025–26)

पाठ्यक्रम कोड : MSK-001/2025-26

प्रिय छात्रों/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य है, इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जॉच स्तरीय कार्यक्रम का उद्देश्य यह जॉचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, इसी का मूल्यांकन करना इस सत्रीय कार्य का उद्देश्य है, यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है बल्कि अध्ययन के दौरान जो कुछ सिखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। यह उद्देश्य है।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये–

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे प्रदर्शित है:

अनुक्रमांक :.....
नाम :.....
पता :.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :.....
सत्रीय कार्य कोड :.....
अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :.....
दिनांक :.....

3) उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का प्रयोग करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।

4) प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।

5) सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निम्न निर्धारित तिथि तक तवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अन्तिम तिथि :

जुलाई 2025 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2026
जनवरी 2026 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2026

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगाः

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। पुनः इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी महत्वपूर्ण बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास :** अपने उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए तथा प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।
3. यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :
   क) आपका उत्तर तार्किक एवं क्रमबद्ध हो।
   ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्टता हो।
   ग) दिया गया उत्तर आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
   घ) कोई भी उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक न हो।
   ड.) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों।
4. **प्रस्तुतिः** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएं, तो उसको साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
5. **विशेषः** अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

सत्रीय कार्य

MSK–001 संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

पाठ्यक्रम कोड –MSK: 001
पाठयक्रम शीर्षक – संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य
सत्रीय कार्य – MSK – 001/TMA 2025–2026
पूर्णांक – 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

1. अधोलिखित में से किन्हीं तीन की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :– 3x20= 60

(क) तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो।
रन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः।
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे।।

(ख) छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै।
स्त्वय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे।।
नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां।
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः।।

(ग) प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्रे।
हैमं तालद्रुमवनमभूदत्र तस्यैव राज्ञः।।
अत्रोद्भ्रान्तः किल नलगिरिः स्तम्भमुत्पाट्य दर्पा।
दित्यागान्तून् रमयति जनो यत्र बन्धूनभिज्ञः।।

(घ) श्यामास्वङ्गं, चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं।
वक्त्रच्छायां शशिनि, शिखिनां बर्हभारेषु केशान्।।
उत्पश्यामि प्रतनुषु नदीवीचिषु भ्रूविलासान्।
हन्तैकस्मिन्क्वचिदपि न ते चण्डि! सादृश्यमस्ति।।

(च) यत्रोन्मत्तभ्रमरमुखराः पादपा नित्यपुष्पा।
हंसश्रेणीरचितशना नित्यपद्मा नलिन्यः।।
केकोत्कण्ठा भवनशिखिनो नित्यभास्वत्कलापा।
नित्यज्योत्स्नाः प्रतिहततमोवृत्तिरम्याः प्रदोषाः।।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 2X10= 20

क) महाकाव्य की परिभाषा तथा महाकाव्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालें।
ख) कथासाहित्य का उद्भव कैसे हुआ ? विस्तारपूर्वक प्रकाश डालें।
ग) रस–निरूपण पर प्रकाश डालें।
घ) काव्य की परिभाषा देते हुए काव्य प्रयोजन का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का चरित्र–चित्रण कीजिए। 2X5= 10

(क) वासवदत्ता (ख) चारुदत्त
(ग) यक्ष (घ) शाकार

4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। 2X5= 10

(क) बुद्ध चरितम् (ख) नायिका भेद
(ग) रूपक (घ) अर्थक्षेपक